THE FORCE MULTIPLIER

Remount Veterinary Corps has been carrying on the great
aditions of dedication, valour and sacrifice written on Indian
attlefields since ancient times through animals trained for effective
se in war tactics as Force Multipliers.

Remount Veterinary Corps was raised in 1779 in Bengal,
itially with the name "Stud Department". It has witnessed many
ansformations over the years and was given the present name of
ie "Remount Veterinary Corps" in 1960 after Military Farms were
eparated from it as an independent Corps. The Corps is one of the
ldest services of Indian Army and has a glorious past. It has
istinguished itself by undertaking the arduous task of converting
ie strength of mute animals into a formidable force thus
ynchronizing the saga of Indian valour of yore with the finest tenets
f modern day tactical warfare. The Corps Motto "PASHU SEVA
SMAKAM DHARMA" i.e "SERVICE TO ANIMALS IS OUR DUTY"
ums up the duties and role entrusted to it.

The Remount Veterinary Corps is extensively involved in
rovisioning, scientific breeding, rearing, providing specialized
aining of horses, mules and dogs and their issue to Indian Army as
orce Multipliers. Army dogs are trained in mine detection, explosive
etection, guard/attack, infantry patrol, search and rescue and
valanche rescue operations. The Corps provides complete vet
over to these army animals and is also actively engaged in conduct
f several high tech applied research projects in the field of
eterinary science. Central Mil Vet Lab (CMVL) at Meerut Cantt has
ie rare distinction of being the country's only NABL accredited vet
ib with ISO/IEC 17025: 2005 Standards in the field of biological
esting and advanced diagnostics.

The unique saga of dedication, valour and sacrifice of RVC
ained equines and canines alongwith their trainers is reflected in
iultifarious force multiplying roles played by these mute warriors in
id of army and paramilitary forces during war and peacetime ops.
hey have rendered invaluable assistance to civilian authorities in
mes of natural disasters & calamities such as assistance during
huj earthquake (26 Jan 2001), Tsunami (26 Dec 2004), J&K
arthquake (08 Oct 2005) and Leh cloudburst (06 Aug 2010).
hese "silent warriors" have established themselves as "force
iultipliers" and have always remained in the forefront for guarding
ie nation's interests. The Corps has actively participated in both
/orld Wars and post Independence, it has been integrally involved
 the J&K Operations (1947-48); NEFA Operations (1962) and
ido-Pak wars of 1965 & 1971. RVC Units were actively involved in
IPKF operations in Sri Lanka and played a crucial role in "Op Vijay"
during Kargil war of 1999 in meeting the emergent operational
requirements of animal transport in far flung posts.

RVC Units have also been deeply involved in counter-insurgency ops in the ongoing Low Intensity Conflict Operations (LICO) in Northern and Eastern Command theatres. These RVC trained canines have proved their phenomenal capabilities in detecting explosives/IEDs,mines, tracking terrorists/saboteurs, guarding vital installations in hazardous climatic conditions and inhospitable terrain thus saving thousands of lives of soldiers/civilians and vital equipments.

RVC has played a unique role in development of equestrian sports in IA. The recent silver medal winning team in equestrian eventing comprised three riders trained at AEN, RVC C&C of which two riders were from RVC which speaks volumes of its contributions.

The Corps has also contributed significantly to India's peace keeping efforts around the troubled parts of the Globe by being part of Indian Peace Keeping contingents under aegis of the United Nations. Presently the Corps is a part of three major UN Peace Keeping Missions viz. UNIFIL (Lebanon) and two missions in UNMISS (Sudan).

The plethora of awards and honours garnered by the Corps are testimony to its high standards and excellence. The honours and awards include 1 Shaurya Chakra, 7 Sena Medals (Gallantry), 3 Sena Medals (Distinguished), 1 Param Vishisht Sewa Medal, 11 Officer of the Most Excellent Order of the British Empire (OBE), 5 Member of the Most Excellent Order of the British Empire (MBE), 15 Ati Vishisht Seva Medal (AVSM), 25 Vishisht Seva Medal (VSM), 1 Arjuna Award, 273 COAS Commendation Card (Personnel), 70 COAS Commendation Card (Army Dogs), 21 UN Force Commander's Commendation.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp, a First Day Cover and Information Brochure as a tribute to the yeoman service and supreme sacrifices made by the "silent warriors" and devoted trainers of the RVC.

Credits:-

Stamp/FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet : Ms. Nenu Gupta

Text : Based on information received from the proponent

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

शक्ति संवर्धक
THE FORCE MULTIPLIER

विवरणिका BROCHURE

शक्ति संवर्धक

रिमाउण्ट पशु चिकित्सा कोर युद्ध कौशलों का कारगर प्रयोग करने में प्रशिक्षित ाशुओं की सहायता से भारत की युद्ध भूमियों में प्राचीन काल से लिखी गई समर्पण, ौर्य व बलिदान की महान परम्पराओं का निर्वहन शक्ति संवर्धक के रूप में करता आ हा है।

रिमाउण्ट वेटेरिनरी कोर की स्थापना 1779 ई. में बंगाल में हुई थी तथा आरंभ में सका नाम "स्टड डिपॉर्टमेंट" था। कालांतर में यह कोर कई परिवर्तनों की गवाह रही तथा मिलिट्री फार्म के एक स्वतंत्र कोर के रुप में अलग होने के पश्चात् 1960 में से इसका वर्तमान नाम रिमाउण्ट वेटेरिनरी कोर दिया गया। यह कोर भारतीय सेना े प्राचीनतम सेनांगों में से एक है तथा इसका एक शानदार इतिहास रहा है। कोर ने न मूक पशुओं की शक्ति को एक सशक्त बल के रूप में परिवर्तित करने के कठिनतम ार्य को सम्पन्न कर एक अद्भुत कार्य किया है। इस प्रकार कोर ने प्राचीन भारतीय ौर्य गाथाओं का आधुनिक रणकौशल के सिद्धांतों के साथ एक सुन्दर सम्मिश्रण किया है। कोर का आदर्श वाक्य "पशु सेवा अस्माकम् धर्म" है जिसका तात्पर्य है -"पशु सेवा हमारा कर्तव्य है"। यह कोर के कर्तव्यों व कार्यों को परिभाषित करता है।

रिमाउण्ट वेटेरिनरी कोर अश्वों, खच्चरों व श्वानों की व्यवस्था, वैज्ञानिक कनीकयुक्त प्रजनन, पालन–पोषण तथा उन्हें विशेष प्रशिक्षण देकर भारतीय सेना ो देने के कार्यों को व्यापक रूप से कर रही है। सेना के श्वानों को बारुदी सुरंगों, ास्फोटकों का पता लगाने, रक्षा/हमला व ट्रैकर्स का कार्य, इन्फैन्ट्री गश्त, खोजी वं बचाव कार्य तथा हिमस्खलन होने पर बचाव कार्य करने का विशेष प्रशिक्षण दिया ाता है। कोर द्वारा सेना के पशुओं को पूर्ण पशु चिकित्सा कवर प्रदान किया जाता । यह कोर पशु चिकित्सा के क्षेत्र में कई उच्च स्तरीय तकनीकी प्रायोगिक नुसंधान परियोजनाएं चलाने में सक्रिय भूमिका निभा रही है। मेरठ कैन्ट स्थित न्द्रीय सैन्य पशु चिकित्सा प्रयोगशाला (सीएमवीएल) को जैविक प्रयोगों व ाधुनिकतम रोग अन्वेषण के क्षेत्र में आईएसओ आईईसी 17025 : 2005 के मानकों े अनुरुप देश की एकमात्र एनएबीएल द्वारा मान्यताप्राप्त प्रयोगशाला होने का गौरव ासिल है।

आरवीसी द्वारा प्रशिक्षित अश्वों एवं शक्ति संवर्धक श्वानों तथा उनके प्रशिक्षकों े समर्पण, शौर्य व बलिदान की अतुलनीय गाथा इन मूक योद्धाओं द्वारा युद्ध एवं ांतिकाल के दौरान सेना व अर्धसैनिक बलों को दी गई शक्ति संवर्धक सहायता में रिलक्षित होती है। भुज में आए भूकंप (26 जनवरी 2001), सुनामी (26 दिसम्बर 004), जम्मू एवं कश्मीर भूकंप (08 अक्टूबर 2005) तथा लेह में बादल फटने (06 गस्त 2010) जैसे प्राकृतिक प्रकोपों व आपदाओं के दौरान इन्होंने सिविल प्रशासन ो अमूल्य सहायता प्रदान की। इन मूक योद्धाओं ने "शक्ति संवर्धक" के रूप में अपनी हचान बनाई है और राष्ट्रहितों की सुरक्षा करने में सबसे आगे रहे हैं। कोर ने दोनों ाश्वयुद्धों में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा स्वतंत्रता के पश्चात् यह कोर म्मू–कश्मीर ऑपरेशन (1947–48), नेफा ऑपरेशन (1962) तथा 1965 व 1971 के ारत–पाक युद्ध में पूरी तरह से शामिल रही है। कोर की यूनिटें श्रीलंका में भारतीय ांति स्थापना सेना के अभियानों में भी सक्रिय रुप से शामिल रही हैं तथा इन्होंने 999 के कारगिल युद्ध के दौरान चलाए गए "ऑपरेशन विजय" के दौरान दूर–दराज े क्षेत्रों में स्थित चौकियों की पशु परिवहन संबंधी आपातकालीन् ऑपरेशनल आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

आरवीसी यूनिटें प्रति विद्रोहिता अभियानों में भी पूर्ण रूप से शामिल रही है तथा इसके द्वारा प्रशिक्षित सेना श्वान सैन्य बलों की सुरक्षा एवं सफलता सुनिश्चित करने तथा उत्तर एवं पूर्वी कमान थिएटरों में चल रहे लो इंटेंसिटी कंफ्लिक्ट्स ऑपरेशंस Low Intensity Conflicts Operations (एलआईसीओ) में आतंकवादी व राष्ट्रविरोधी तत्वों के खतरनाक मंसूबों को नेस्तनाबूद करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। विस्फोटकों/आईईडी, बारूदी सुरंगों का पता लगाने तथा आतंकवादियों/विध्वसंकारियों को खोजने और खतरनाक मौसम एवं दुर्गम भू–भागों में महत्वपूर्ण संस्थापनाओं की रक्षा करने आदि कार्यों में आरवीसी द्वारा प्रशिक्षित इन श्वानों की असाधारण क्षमता एवं अद्भुत उत्कृष्टता ने हजारों सैनिकों/नागरिकों का जीवन व महत्वपूर्ण उपस्करों को बचाया है।

आरवीसी ने भारतीय सेना में घुड़सवारी खेलों के संवर्धन में उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। हाल ही में घुड़सवारी में रजत पदक विजेता टीम के तीन सदस्यों को एईएन, आरवीसी सेन्टर एवं कॉलेज में प्रशिक्षित किया गया था जिनमें से दो घुड़सवार आरवीसी से थे। यह खेलों के प्रति कोर के उत्तम योगदान को दर्शाता है।

कोर ने संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में भारतीय शांति स्थापना दलों के अंग के रूप में पूरी दुनिया के अशांत क्षेत्रों में भारत के शांति स्थापित करने के प्रयासों में भी उल्लेखनीय योगदान किया है । वर्तमान में कोर जिन तीन संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन में शामिल है वे हैं:– यूनीफिल (लेबनान) तथा यूनमिस (सूडान) के दो मिशन ।

कोर द्वारा अर्जित पुरस्कारों व सम्मानों की बड़ी संख्या इसकी उत्कृष्टता एवं उच्च मानदंडों की गवाह है। कोर को प्राप्त पुरस्कारों व सम्मानों में हैं:– 1 शौर्य चक्र, 7 सेना मेडल (वीरता), 3 सेना मेडल (विशिष्ट), 1 परम विशिष्ट सेवा मेडल (पीवीएसएम), 11 ऑफिसर ऑफ द मोस्ट एक्सीलेंट ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (ओबीई), 5 मेम्बर ऑफ द मोस्ट एक्सीलेंट ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (एमबीई), 15 अति विशिष्ट सेवा मेडल (एवीएसएम), 25 विशिष्ट सेवा मेडल (वीएसएम), 1 अर्जुन पुरस्कार, 273 सेनाध्यक्ष प्रशंसा पत्र (कार्मिक), 70 सेनाध्यक्ष प्रशंसा पत्र (सैन्य श्वान), 21 यू एन फोर्स कमांडर प्रशंसा पत्र।

डाक विभाग 'मूक योद्धाओं' और आरवीसी के समर्पित प्रशिक्षकों द्वारा की गई अद्वितीय सेवा और सर्वोच्च बलिदान को श्रद्धांजलिस्वरूप एक स्मारक डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण और सूचना विवरणिका जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :–

डाकटिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : सुश्री नीनू गुप्ता
विवरणिका/विरूपण मोहर

मूलपाठ : प्रस्तावक से प्राप्त की गई सूचना के आधार पर

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	600440
Stamps Printed	:	600440
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00